सुरगाँव बंजारी

समाज संस्कृति पर्यटन

प्रयाग शुक्ल

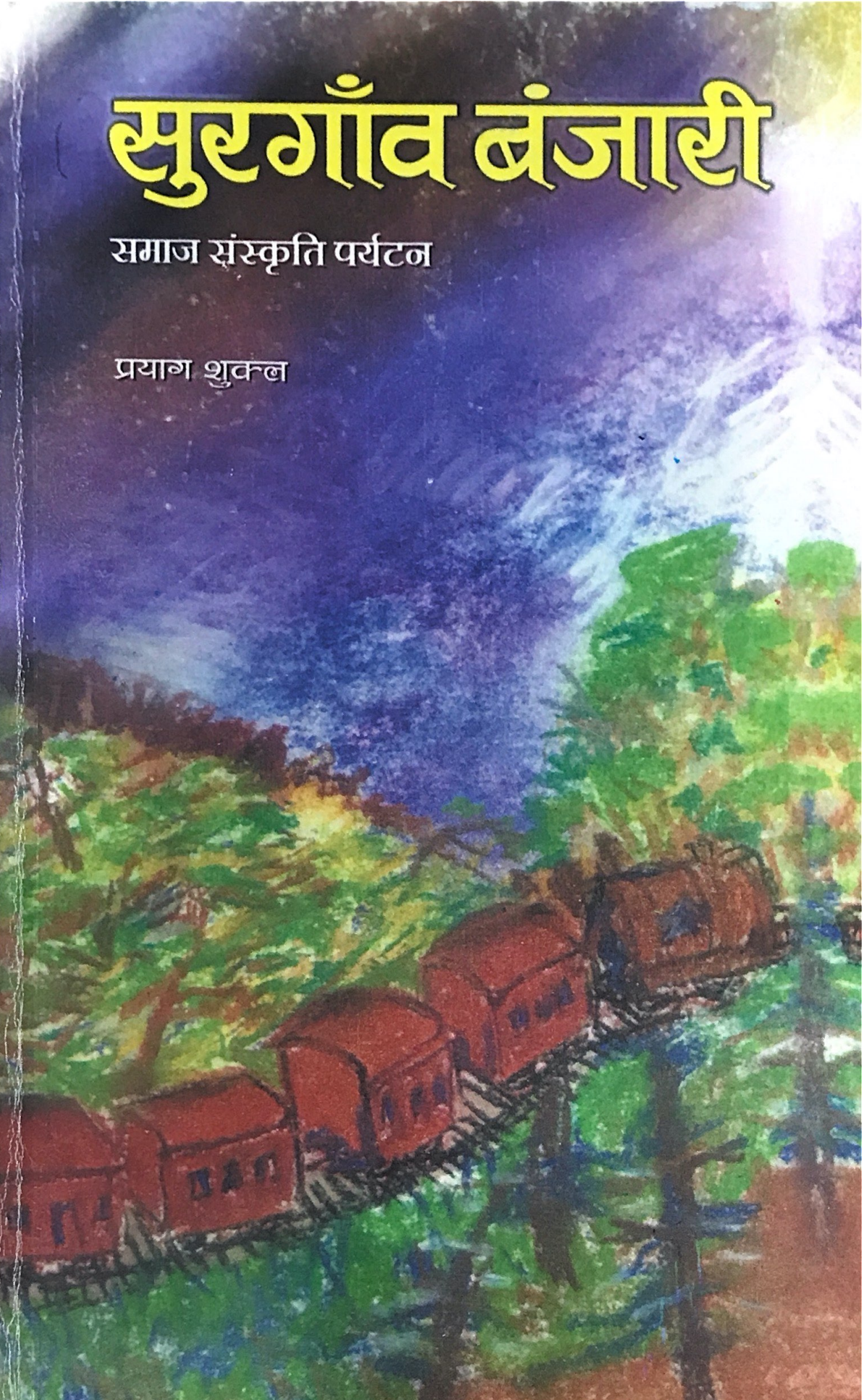

सुरगाँव बंजारी

(समाज संस्कृति पर्यटन)

प्रयाग शुक्ल

समर्पण

प्रिय ओम थानवी और प्रेमलता जी को चंडीगढ़ के उन दिनों

की याद में विशेष रूप से, जब मैं और मेरा परिवार,

उनके साथ ठहरा करता था और तरह-तरह के व्यंजनों से लेकर

जीवन-जगत की बहुतेरी चर्चा का सुख उठाता था-

सप्रेम समर्पित है यह पुस्तक

भूमिका

हम जो कुछ भी देखते हैं, वह हमारी स्मृति में कहीं-न-कहीं दर्ज होता रहता है। सो, कह सकते हैं कि एक बड़ा स्मृति-भंडार हर व्यक्ति के पास रहता है, क्योंकि नींद की अवस्था को छोड़ दें, तो हर व्यक्ति बचपन से ही अपनी आँखों के आगे से बहुत कुछ गुज़रता हुआ देखता है। और यह 'देखना' मानो बराबर जारी रहता है। नींद में भी कुछ सपने तो हम देखते ही हैं। बहरहाल, कभी-कभी यह भी होता है कि वर्तमान में देखी जा रही कोई चीज़ हमें स्मृति की दुनिया में ले जाती है और वह पलटकर वर्तमान को भी हमें एक नई तरह से दिखा जाती है। यानी वर्तमान और 'स्मृति' मिलकर कुछ नया रचते हैं।

हम जानते हैं कि बचपन से हम जो कुछ देखना शुरू करते हैं, उसमें से सब कुछ हमें याद नहीं रहता है। पर, किसी क्षण-विशेष में देखी हुई कोई चीज़ ऊपर आ जाती है तो इसका यही अर्थ है कि वह एक 'अनुभव' के रूप में हमारे भीतर बसी रही है, और किसी क्षण-विशेष में फिर जाग उठी है-एक नए अनुभव में परिवर्तित होकर।

इन टिप्पणियों में स्मृति और वर्तमान के बीच कुछ ऐसी ही आवाजाही है। और कई टिप्पणियाँ ऐसी भी हैं जो ऐन सामने के दृश्य में कुछ ऐसा देख और पढ़ लेती हैं, जिसमें से स्वयं जीवन का, सामाजिक जीवन का, सांस्कृतिक जीवन का, कोई मर्म और आशय झाँक उठता है, और झकझोर जाता है। पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, नदियों और सुरम्य स्थलों के प्रसंग से भी कई टिप्पणियाँ निकली हैं। ये 'जनसत्ता' दैनिक के 'दुनिया मेरे आगे' स्तंभ में समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं, और पाठकों की आत्मीयता प्राप्त करती रही हैं। उसी आत्मीयता का मानो यह आग्रह बना है कि इन्हें प्रस्तुत रूप में भी संकलित किया जाए। ऐसी ही टिप्पणियों की एक पुस्तक पहले 'सम पर सूर्यास्त' नाम से प्रकाशित हो चुकी है। यह क्रम में दूसरी है।

इनके लिखे जाने के प्रसंग/ संदर्भ इनमें निहित ही हैं, सो उन्हें अलग से बताने-गिनाने की ज़रूरत नहीं रह जाती है। सिर्फ इस तथ्य के कि इनमें से कई यात्राओं के दौरान ही लिखी भी गई हैं-किसी अनुभव और दृश्य के ऐन सामने ही। सो, इन्हें यात्रा-वृत्तांत के रूप में भी देखा ही जा सकता है-पर, आग्रह यही है कि इन्हें मनुष्य-प्रकृति और मनुष्य और मनुष्य के बीच के संबंधों वाले दायरे में रखकर देखना ही श्रेयस्कर होगा। हाँ, देश के विभिन्न

अंचलों की झाँकी भी इनमें मिल जाएगी। और कई आंचलिक स्थलों की सुधियाँ स्वयं इनके लेखक की ऐसी पूँजी बन गई हैं, जिनके सहारे या जिनके कारण, अगली यात्राओं के प्रति उत्साह और उत्सुकता में कमी नहीं होने पाती है।

जो आनंद, जो मधुरता, और जो जिजीविषा इनके लिखे जाने के दौरान प्राप्त हुए हैं, वे मुरझा जाने वाले नहीं हैं- इसका कुछ दावा तो लेखक कर ही सकता है, क्योंकि वह इन्हें अपने भीतर सजग रूप से आज भी महसूस करता है।

-प्रयाग शुक्ल

क्रम

सुरगाँव बंजारी	5
गोमती के खंडहर	13
साइकिली पहिए	15
डाक-संसार	17
हरे पहाड़	19
एकाकी पथ	22
सब्ज़ी-संसार	24
चिट्ठियों का बसेरा	26
हाइवे नंबर आठ	29
बड़ बड़ोदरा	31
अट्टालिका-परिक्रमा	33
काँगड़ा घाटी में	36
पहाड़ पर बस	38
मैसूर में सुबह	40
अजंता की ओर	42
धूलिकणों में रायपुर	44
बाज़ार में बतियाना	46
कोटा के वृक्ष	49
इमा बाज़ार	51

नागपुर के आगे 54
चेन्नई में चाय 57
नगालैंड की हाट 60
दिनांक दीमापुर 62
झील-दर्शन 65
सफेद तितलियाँ 67
जलियाँवाला बाग़ 69
सेमल के फाहे 72
वर्षा कोलकाता 74
निर्जल प्रपात 76
घोड़ागाड़ी 78
हरा केरल 80
मडगाँव से पंजिम 82
डल के किनारे 84
दिन ये फूल के हैं 87
हरा हिरण 90
बारादरी में बारिश 92
विक्टोरिया मेमोरियल में 94
शांत शांतिनिकेतन 97
एलोरा का अचंभा 100
कोहरे के दृश्य 103
मोरनी झील 105

संगारेड्डी का वेलुगु 107

अपना-अपना बचपन 110

सुबह की चाय 113

जम्मू में 116

सेक्टर चौदह 119

कोकिल 122

झुकी हुई डालें 125

धूलभरी आँधी 128

कोच्चि के कौव्वे 131

फिंकी हुई चीज़ें 134

साँझ का सच 137

पहाड़ की छाया 140

वर्षा सुहानी 143

वह दरवाज़ा 146

वर्षा में शहर 149

तीन बजे ब्रह्मपुत्र 151

जल-थल जीवन 154

ताज़ा कोलकाता 157

मल्लिका के साथ 159

आगरा की गली 161

कूड़े 163

मुंबई में चीता 165

श्रीनगर में नाटक 167
दसवीं मंज़िल 169
आकारों का संसार 172
इमली के पेड़ 175
कल्लू और सेतु 178
इंफाल की रात 181
लोकताक की नाव 184
शाम होते ही 187
पत्ते केवल 189
बंगलूर पंद्रह जनवरी 192
आनंदीलाल 195
गुड़धानी 198
जयपुर में 201
पलई की ढाणी 204
शोर और हरियाली 207
शाखामृग 210
हाजी कमरुद्दीन 213
तवी किनारे 216
सात बजे गंगा 219
मथुरा में मोर 222
सूरत में ताप्ती 225
सरिस्का 228

खंडवा जंक्शन 231

क्षिप्रा के बीचोंबीच 234

छतरी कोलकाता 237

सफाई और कला 240

राजिम 243

कास 246

बारिश में 249

नाहरलागुन 251

गुवाहाटी की शाम 253

पहाड़ी सुबह 256

गंजबासौदा बादल 259

उदयपुर में सूर्योदय 262

डाब का पानी 264

सुरगाँव बंजारी

जो सुपरफास्ट ट्रेन लखनऊ से चलकर मुंबई सेंट्रल जाती है, वह जब भोपाल से चलकर इटारसी जंक्शन पर भी नहीं रुकी, और सीधे खंडवा जाकर ही कुछ देर के लिए दम लेगी, तो वह भला सुरगाँव बंजारी में कैसे रुकती! पर वहाँ न जाने किस संयोग से कुछ धीमी हुई है, और छोटे-से प्लेटफॉर्म और स्टेशन की छोटी-सी रूमानी-सी लगती इमारत में यह नाम पढ़ने को मिल गया है: सुरगाँव बंजारी। जैसे कोई वाद्ययंत्र छेड़ दिए जाने पर कुछ-न-कुछ तो झंकृत कर ही देता है, वैसे ही नाम ने भी कैसी तो एक मीठी-सी झंकार भर दी है। रवींद्रनाथ की कहानियों की जो किताब इस खंडवा यात्रा में मैंने साथ रख ली थी, वह बंद करके एक ओर रख दी है।

अब यह नाम कुछ देर तक तो भीतर-ही-भीतर गूँजता रहेगा। दिल्ली से चलकर भोपाल पहुँचा था। वहाँ एक रात रुककर बिल्कुल सुबह यह ट्रेन पकड़ी है, माखनलाल चतुर्वेदी स्मृति समारोह में भाग लेने के लिए। इस वक़्त सुबह के कोई साढ़े नौ हो रहे हैं, कोई घंटे भर बाद ही खंडवा आ जाएगा। पर अभी तो सुरगाँव बंजारी के साथ हूँ: एक शब्द खेल शुरू हो गया है-सुरगाँव तो स्पष्ट है, पर यह 'बंजारी' क्या बंजारा शब्द से ही निकला है? या फिर बन-झाड़ी, बंजारी हो गई है? या कभी यह धरती-वन किसी अग्नि से जले थे, और यह बंजारी, बन-जारी से निकला है? या फिर 'बंजर' से निकला है बंजारी। पर यहाँ तो चारों ओर वर्षा के बाद वाली खूब हरियाली है। और यह भी तो देखिए कि सुरगाँव का अर्थ भले ही स्पष्ट हो, पर सुरगाँव और बंजारी की कोई संगति बैठ रही है क्या? क्या ये दो बिल्कुल अलग संदर्भों वाले दो शब्द नहीं हैं, जो एक-दूसरे के बगल में आकर बैठ गए हैं और एक-दूसरे के साथ मिलकर कुछ लयात्मक, कुछ संगीतमय गुंजरित कर रहे हैं?

कहीं पढ़ा था, किसी इंटरव्यू में कि ऐसे ही किसी छोटे-से स्टेशन के सांगीतिक लगते नाम ने कुमार गंधर्व के मन में किसी राग की गूँज भर दी थी! या संभवत: एक नया राग रचने की प्रेरणा दी थी उन्हें। या कि प्रसंग मुझे ठीक से याद नहीं है, और उस छोटे-से स्टेशन के मधुर नाम ने उन्हें एक प्रकार की संतुष्टि से भर दिया था। बस। जो भी हो, इतना तो 'ठीक' याद है ही कि कुमार गंधर्व और एक छोटे-से स्टेशन के (नाम के) मध्य, कुछ घटित हुआ था, और यह संस्मरण स्वयं कुमार जी ने साक्षात्कार लेने वाले को सुनाया था।